धर्म जीवन

वार्षिक चन्दा रु. 50/-

जनवरी 2009

परम पूजनीय भगवान देवात्मा का 158 वां
शुभ जन्म-महोत्सव

नया वर्ष मुबारक हो

सन् 2008 बीत गया, हम सबके लिए कुछ ग़म और कुछ खुशियां लेकर आया। भारतवासी गर्व से सिर ऊंचा करके चल सकते हैं कि भारत विकास की ओर बढ़ रहा है, सारा विश्व भारत को महाशक्ति बनने के मार्ग की ओर बढ़ता देख रहा है। चन्द्रयान छोड़ा गया, जो भारत की बहुत बड़ी उपलब्धि है। मंहगाई पर काबू पाया जा रहा है, और जब सारी दुनिया की आर्थिक अवस्था चरमरा गई है, भारत की आर्थिक स्थिति काबू में है। हमारे चन्द मेहनती, योग्य नेताओं ने अनथक मेहनत की है और दुनिया को दिखा दिया है, कि भारत मुसीबतों से उभरना जानता है। नये नये मॉल्ज़ बन रहे हैं, सड़कों को सुन्दर रूप दिया जा रहा है। Fly over बनने से यातायात सुगम हो रहा है। हमारे खिलाड़ी भी आगे से उभर रहे हैं। क्रिकेट टीम ने तो एक नया इतिहास रचा है।

सबसे बड़ी उपलब्धि यह हुई कि इस बार हमारी States के इलैक्शन में लोगों ने अद्‌भुत जागृति दिखाई है। वोट उसी को दिए जिन्होंने काम किया, चाहे वह किसी पार्टी का हो। जहां पार्टीबाज़ी ने क्या हमारे देश और क्या हमारी समाजों का स्तर गिरा दिया है, यह बहुत ही सुन्दर सन्देश देशवासियों ने दिया है। भ्रष्ट नेताओं को मुंह की खानी पड़ी है। कितने पक्षों में देश उन्नति कर रहा है।

परन्तु वर्ष के अन्त में जो त्रासदी भारत ने झेली है, वह भी कभी न भूलने वाली घटना है। मुंबई का आतंकवादियों का हमला इतना भयानक था कि भारत क्या उसने सारे विश्व को हिला दिया है। मासूम लोगों की जानें गईं, ईमारतें नष्ट हो गईं लोगों के आंसु अब तक थमने का नाम नहीं ले रहे। परन्तु इस दुर्घटना ने भारत की आत्मा को जगाया है। राजनेता जो गर्ज - गर्ज कर एक दूसरे पर कीचड़ उछाल रहे थे, उनकी बोलती बन्द कर दी है। शहीदों के परिवारों ने दोहरे मुखाटे पहने हुए नेताओं पर अपने घर के दरवाज़े बन्द कर दिए और आवाज़ उठाई कि निक्कमें, भ्रष्ट और लोगों का खून चूसने वाले नेताओं के लिए कमांडोज़ की फौज क्यों? अब सब नेता बिदके हुए हैं, यह हमारे मानसिक विकास और आत्म विश्वास का प्रतीक है।

यह सारा वर्ष मिला जुला रहा, परन्तु कुछ जागने का सन्देश देकर गया है। हमारी ऐसी कामना है कि जो एक जुट होने की भावना देशवासियों ने दिखाई है, धर्म, जाति को भूलकर एक स्टेज पर आकर खड़े हुए हैं, यह भावना बढ़ती जाए और हमारा यह प्यारा देश, सबसे ऊंची और नैतिक मूल्यों की सभ्यता का देश अपनी अच्छी विरासत को फिर से जिए, तभी हम सब खुशहाल हो सकते हैं। इस वर्ष इलैक्शन होने वाले हैं, हम सब अपनी पार्टी भूलकर अच्छे लोगों को वोट करें, जो देश का कुछ हित कर सकें, अपने स्वार्थ के लिए नेता न चुनें।

हम अपनी धर्म समाज के लिए भी यह शुभ कामना करते हैं कि हम उसका एक हितकर अंग बनें, समाज की भलाई सोचें, पक्षपात से ऊपर होकर समाज को आगे बढ़ाने के लिए तरकीबें सोचें। जिस धर्म समाज में आकर हमारे जीवन बचे हैं, हमारे परिवारों ने नव जीवन पाया है, उसको गिरते हुए देखकर अपने लाभ और हानि को न देखें, उसको आगे बढ़ाने के लिए कुछ सार्थक उपाय सोचें, शुभ कामना करें ताकि हमारी यह प्यारी धर्म समाज ने जो जगत उद्धार का बीड़ा उठाया है और जिसे देवात्मा सत्गुरु ने अपने खून पसीने से सींचा है, उसका उद्देश्य पूर्ण हो। हम सब का शुभ हो।

शुभ कामनाओं के साथ आपकी साथी सेवका

सुरजीत बराड़

धर्म जीवन

खण्ड 21 अंक 1

जनवरी 2009

वार्षिक मूल्य 50 रुपये

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़

परम पूज्नीय भगवान देवात्मा का 158 वाँ शुभ जन्म महोत्सव

परम पूजनीय भगवान देवात्मा का 158 वाँ शुभ जन्म महोत्सव 11 दिसम्बर से 14 दिसम्बर तक शुभवती धर्मशाला, सैक्टर 18 - डी चण्डीगढ़ में पिछले कई वर्षों की तरह पूरे चावभाव से मनाया गया। इस शुभ अवसर की सफलता के लिए विशेष तैयारियां की गई।

श्रीमान बलदेव सिंह जी ने सब स्थानों का अपने साथियों सहित दौरा किया। सेवकों और श्रद्धावानों को इस शुभ अवसर पर पहुँचने की प्रेरणा दी। इस मकसद के लिए बहुत से पत्र लिखे गए, फोन भी किए गए। हित स्त्रोत और धर्म जीवन के विशेष अंक निकाले गए। उनके द्वारा भी यह शुभ संवाद पहुंचाया गया। सैंकड़ों सुन्दर निमन्त्रण पत्र छपवाकर अधिकारी जनों को पोस्ट किए गए।

महोत्सव की सभाओं के प्रोग्राम के लिए हर साल की तरह पंडाल तैयार किया गया। पंडाल को अन्दर से बर्फनुमा सुफेद चादरों से खूब सजाया गया। परम पूजनीय भगवान देवात्मा का सुन्दर फोटो लगाया गया। माटोज़ बहुत सुन्दर ढंग से लगाए गए। उच्च आत्माओं की फोटोज़ पंडाल के दोनों ओर सजाए गए। दिव्य शिक्षा गुरुकुल कालिज की छात्राओं ने जगदीष जी की रहनुमाई में सजावट का काम किया। छोटे बड़े झण्डे लगाए गए। कुछ धर्म सम्बन्धी। पहले आ गए थे, वह भी जगदीष जी के साथ सहायक हुए। धर्मशाला के कमरों को सफेदी आदि करवाई गई। बैंड बाजे का प्रबन्ध किया गया। गर्म पानी आदि का भरपूर प्रबन्ध किया गया। श्रीमान सीता राम जी, श्रीमान बूटा सिंह जी और रजिन्द्र जी देहरादून ने इसको बखूबी निभाया। घण्टा बजाने का काम ओम प्रकाश वर्मा जी करते रहे। किताबों को बेचने का काम भी खुशी - खुशी वर्मा जी करते रहे। दफ्तर का काम जगदीष जी और उनके साथ उनके बेटे सहायक होते रहे। हारों का प्रबन्ध जगदीष जी करते रहे। भजनों का गान जगदीष जी और दत्ता साहिब करते रहे।

टिकट आदि देखने का काम करते रहे। कोचिंग सैंटर चण्डीगढ़ के लड़के लड़कियों ने भी Speeches द्वारा और भजनों द्वारा बड़े उत्साह से

भाग लिया। गुरुदेव राज जी और साथियों ने सुबह 13 तारीख विशेष दिन पर खूब जोश से भजनों का गान किया।

खाने का भी प्रबन्ध सन्तोषजनक रहा। सभाएं और लैक्चर अच्छे प्रभाव दायक रहे। मौसम ने भी बड़ा साथ दिया। ठण्ड न होने के कारण सब प्रोग्राम निर्विघ्न समाप्त हुआ।

नीचे लिखे स्थानों से यात्री पहुँचे :-

दिल्ली, मेरठ (मन्डवानी) खतौली, देहरादून, पदमपुर, गजसिंह पुरा, गोनियाना मण्डी, थराजवाला, महिमा सवाई, केसूपुरा, मल्लेका, संगरूर, कल्याण मलका, पंचकूला, मुगला, दड़बा, जमनानगर, अम्बाला, भुज (गुजरात) लुधियाना, मोगा, धमियारा, मोदीपुरम, समराला, मुज्जफरनगर पटियाला, धर्मशाला, भूंदड़, भटिंडा, ज़ीरकपुर, जीरा, मोदीपुरम आदि।

प्रवेश सभा - 4.00 बजे।

सभापति - श्रीमान बलबहादुर जी।

सभा का घण्टा बजते ही श्रीमान जगदीष जी ने- "हमारे पूजनीय सत्गुरु जी तुम हो धन्य, तुम हो धन्य" गाना आरम्भ किया और सबने उनका साथ दिया। भजन के बाद गुरु जी का सुन्दर फोटो के द्वारा अर्चन किया गया। फिर देव स्तोत्र का समूह गान किया गया। सभापति जी ने गहरे भावों के साथ प्रार्थना की। इसके बाद "बड़े धन्यभाग्य उनके हैं जो गुरु चरणों में आते हैं" नामक भजन का गान किया गया।

फिर सभापति जी ने फरमाया कि जिस अद्वितीय हस्ती का शुभ जन्म दिन मनाने के लिए हम इकट्ठे हुए हैं, वह हमेशा देते ही देते हैं, हम उनको कुछ नहीं देते। आप में से कई जनों को देखकर पूज्यनीय भगवान के चरणों में दिल झुक रहा है। हम सब सुखों के दास हैं, इसलिए हम पापी और झूठे हैं। पाप और झूठ के द्वारा सदा तबाही आती है। जो गुरु महाराज जी के पूजनीय देवरूप के अन्दर लेश मात्र भी नहीं। उल्टा वह तो झूठ पाप के नाशक हैं। हमारे भीतर उनके देवरूप को समझने की भी योग्यता नहीं, पहचानना तो दूर की बात। हम सुख के पिंजरे के कैदी हैं। इस कैद से गुरु महाराज हमें बचाते हैं। ऐसे अद्वितीय और महा हितकर अवसर पर आप सब के पहुंचने का हाथ बांधकर स्वागत करता हूँ। आपके लिए बार-बार शुभ आगमन करता हूँ।

गिणती के विचार से हम संसारिक सम्मेलनों के मुकाबले में बहुत ही कम संख्या में होंगे। यहां उच्च गुणों को देखा जाता है। यदि लाखों के समूह से किसी की भी बुराई न जाए। कोई नीचता न छूटे, तो वह समागम किसी भी काम के नहीं। परन्तु यदि गिणती के चन्द लोग होकर भी यदि हमें अपना नीच जीवन कुछ नज़र आ जावे, हमारी कोई बुराई चली जाए, तो यह सम्मेलन बहुमूल्य है।

सब से कीमती ज्ञान यहां पर मिलता है, इसके मुकाबले कहीं नहीं मिलता। यह ज्ञान हमारे अपने अस्तित्व के सम्बन्ध में हैं, विशेषकर सार वा मुख्य आत्मा के सम्बन्ध में है। इससे बढ़कर और ज्ञान नहीं। यह सर्वश्रेष्ट ज्ञान है। यह कहीं और नसीब नहीं होता। हमारे शारीरिक अंग हैं, उनमें सबसे कीमती दिल और दिमाग हैं। आत्मा के भी अंग हैं। सबसे कीमती वस्तु आत्मा में है उसकी निर्माणकारी शक्ति। इसके विषय में इसको परम पूजनीय भगवान देवात्मा की ज्योति दिखाती है, उसके बिना नज़र नहीं आ सकती।

देवात्मा की दुनियां धर्म की दुनियां है। अत्याचारी, ध्वंसकारी नीच गतियां हमारे नीच भावों को बढ़ाती हैं। निर्माणकारी गतियां हमारे-हमारे

उच्च भावों के द्वारा होती है। जो अंग किसी काम नहीं आता, वह निकक्मा हो जाता है। निर्माणकारी गतियां करने से निर्माणकारी शक्ति बढ़ती है।

हम सब लोग Mad race में शामिल हैं। उसमें हम अन्धकार में ग्रस्त होते जाते हैं। यहां रोशनी मिलती है तो सब कुछ और रूप में दिखाई देता है। अन्धेरे में दूसरे से अधिक पैसा वसूलना लाभ का सौदा लगता है, रोशनी में लगता है कि आत्म नाश का सौदा है। कृतघ्नता हमारा विनाश करती है। गंगू ब्राह्मण ने अन्धता में आत्मा नाश का काम किया। हमारी सारी यात्रा नीच अनुरागों की है। अन्धेरे की है, हानि, दुख और मौत की है। गुरु का दर ऐसा है, जहां अनपढ़ों को भी रोशनी मिलती है। "अनपढ़ तुच्छ शक्तियों वाले भी जो यहां आ जाते हैं, चन्द साल में उनके मुकाबल विद्वान शर्माते हैं।" जीवन विद्या देने के लिए जीवन ज्योति देने के लिए देवात्मा आए हैं। मुझे भी 3 - 4 नीच अनुरागों ने बेसुध कर दिया था, अपने जीवन में आए परिवर्तन के सुन्दर दृष्य पेश किए। नशे, शराब पीने की वस्तुएं नहीं। मांस खाने की वस्तु नहीं।" एहसान फरमोशी पिशाच काम है। यह रोशनी में सदा सदा के लिए दिखाई दे गया। "सत्गुरु आपकी शरण को पाना है इस जग में परम सौभाग्य। "इस दर की महिमा मैं ब्यान नहीं कर सकता।

यह प्रवेश सभा है। हमने हृदय को लाभ प्राप्त करने के लिए तैयार करना है। कुछ नियम पूरे करने हैं। हितकर नियम बताए गए। दीन, श्रद्धावान होकर, गुण चिन्तन, उपकार स्मरण करना, निन्दा, गपशप से बचना, भजन गाने, साधन, सेवा की ओर ध्यान देना, ऐकाकारी पहनकर आना, समय पर सभाओं में आना आदि।

इसके बाद मन्त्री देव धर्म ने सूचनाएं और डियूटीयां वा सभाओं का प्रोग्राम बताया, फिर यह प्रभावशाली सभा समाप्त हुई।

12.12.2008, शुक्रवार

पहली सभा सवेरे 8.30 बजे

सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी।

विषय :- परम पूजनीय भगवान देवात्मा का परम अवश्यक, जीवन दायक सम्बन्ध। पहले भजन का गान किया गया, फिर परम पूजनीय भगवान देवात्मा का छवि द्वारा सुन्दर फूलों के हार से अर्चन किया। उसके बाद देव स्तोत्र का गान वा व्याख्या की गई। फिर सभापति जी ने भरे दिल से सहाय प्रार्थना की। उसके बाद "परम अवश्यक जीवन दायक, मेरे भगवन का सम्बन्ध" नामक भजन का गान किया गया।

फिर सभापति जी ने फरमाया, "इस विश्व का बहुत सारा भाग बेजान है। थोड़ा भाग जानदार है। नेचर असीम है। हमारी पृथ्वी पर जीवन के हालात पैदा हुए और जिन्दगी पैदा हो गई।

हमारा जीवन नेचर के चारों जगतों से जुड़ा हुआ है। अनन्त वजूदों के साथ हम जुड़े हुए हैं। हवा बेजान है, पानी बेजान है। पर हमें जीवन दान देते हैं। इनके बिना जीवन असम्भव है। पशु जगत हमारा अति प्यारा और उपकारी सम्बन्धी है। जिसका मनुष्य घात करके कृतघ्न बन रहा है। माता पिता भी हमारे परम अवश्यक सम्बन्धी हैं। उपकारियों को सताना कृतघ्नता है।

परम पूजनीय भगवान देवात्मा का सम्बन्ध क्यों परम अवश्यक है? हमारी दुर्दशा यह है कि हमारे भीतर कोई सात्विक भाव नहीं। इसलिए हम वहशी जीवन रखते हैं। स्वार्थ का कीड़ा दरिंदा होता है। स्वार्थ के बिना उसे जीवन की कोई होश नहीं होती। पहली पत्नी को और बच्चों को छोड़कर उप

मुख्य मन्त्री दूसरा विवाह करके जो नर्क और बर्बादी पैदा करता है, वह नज़र नहीं आता।

मैं बेसुद्ध होकर कहता था मैं कहां उज्जडों और अनपढ़ों के घर पैदा हो गया, मैं शराबी दोस्तों की सेवा नहीं कर सकता। भगवान की रोशनी ने दिखाया है कि वह फरिश्ते हैं उपकारी हैं, जन्मदाता हैं, पालनकर्त्ता हैं, जो कुछ बना हूँ, उन्हीं की सदका बना हूँ। मास खाना हमने नहीं छोड़ा, हमसे छुड़वाया गया है। मोटे आठ पाप छोड़कर हम अकड़ जाते हैं। मिथ्या-विश्वास बर्बाद करने वाले और विनाशकारी हैं। पागलपन पैदा करते हैं। दौलेशाह के चूहे बन जाते हैं। कृतघ्न्ता का जीवन पागलपन का जीवन है। एक परिवार के बच्चों ने अपनी माँ को कैद कर रखा है। हम रुहानी पक्ष में पागल हैं।

हम दो भाई तलवारें खींचे हुए लड़ रहे थे। पागल थे गुरु की रोशनी के द्वारा दूसरों के अस्तित्व वा उनके अधिकार नज़र आने लगते हैं।

स. सावन सिंह जी को फरिश्ता तहसीलदार बना दिया। वह रिश्वत के द्वारा दूसरों का खून नहीं पीते थे। पक्के ईमानदार बन गए। शुक्रगुज़ार जीवन बना दिया। वहशी जीवन को स्वर्गीय जीव बना दिए। निराला, सुन्दर रूप दे दिया।

गुरु महाराज का सम्बन्ध हमें विवेक देता है। कनल जी फरमाते हैं, आपकी ज्योति के बिना, अन्धेरा ही अन्धेरा है। इसके बिना मैं अन्धा हो जाता हूँ। आपकी ज्योति के बिना मुझे काम अनुराग ही पागल बना देता और बर्बाद कर देता। उनका सेवाकारी, प्रिंसीपल होकर कालिज की घण्टी बजाना, खुद पानी भरना, बैंच साफ करने आदि बताकर उनका जीवन चित्रण किया गया। "है जीवन उच्च बनता जो, किसी के काम आ जावे।" कनल जी की सादगी की हद दी, वह कहते थे कि मैं अपनी पसन्द से गरीब हूँ। धन अनुरागी तड़प रहा है। नींद नहीं आती। उच्च जीवन उच्च भावों से बनता है। ऐसे सम्बन्धी को यदि हम पहचान सकें तो हमारा परित्राण हो सकता है।

सभापति जी ने कहा कि मैं नीच था, स्त्रियों के सम्बन्ध में पागल था। अपना परिवर्तन सुनाया। अब भगवान ने स्वर्गीय जीवन प्रदान किया है। उन्होंने बताया कि कैसे एक शादी पर जाकर एक मित्र के घर उपद्रव मचाया। शराब छलकाई। उसके पिता पुकार उठे कि यह भूत क्यों लेकर आए। फिर भगवान ने मेरा भेड़िया रूप बदल दिया, फिर वही बर्जुग यह कहने के लिए मजबूर हो गए कि श्रीमान जी को शादी पर जरूर लाना। मेरे जाने पर वह खड़े हो जाते, मुझे शर्म आती। हम बेकदरे हैं, गुरु दर की कदर नहीं।

आत्मा का जीवन इससे आगे है, उसकी रक्षा और विकास के लिए देवात्मा का सम्बन्ध अति अवश्यक है। देवात्मा के सम्बन्ध के बिना न नीच जीवन घट सकता है और न उच्च जीवन विकास पा सकता है। इस सम्बन्ध के बिना हमारी सुरक्षा नहीं। यह सभा बहुत प्रभावशाली थी, श्रोतागण बेबस देवात्मा के आगे झुक रहे थे।

इसके बाद मन्त्री जी ने देवात्मा के सम्बन्ध पर भाव पूर्ण ब्यान किया। अगला प्रोग्राम बताया और 4 बार जय ध्वनि करके यह सभा समाप्त हुई।

दूसरी सभा, 2.00 बजे, भजनों की सभा थी, जिसमें सुनील दत्ता जी, श्री जगदीष प्रसाद जी, ओम प्रकाश जी आदर्श अथवा डेराबस्सी B. Ed. कालिज की 6-7 छात्राओं ने (मिसिज डा. सतिन्द्र ढिल्लों के कालिज से) भाव पूर्ण गीत गाए। जगदीष जी एक-एक पद गाते हुए फूट-फूट कर रो पड़े। एक घण्टे तक यह सभा चली।

शाम 4.00 बजे पब्लिक लैक्चर 12.12.2008
वक्ता – मिसिज सुरजीत बराड़ (प्रिंसीपल)
विषय – देवधर्म की लासानी देन
सभापति – श्रीमान डाक्टर विनोद खेड़ा

भजन के गान के बाद श्रीमान विनोद जी खेड़ा ने वक्ता का परिचय करवाया कि किस प्रकार सौभाग्य से उन्हें ऐसे माता पिता के यहां जन्म लेने का अवसर मिला, जिनका सम्पर्क परम पूजनीय भगवान देवात्मा की धर्म समाज से हुआ। बचपन से विकासालय में रहने और श्रद्धेय श्रीमान ईश्वर सिंह जी के सरंक्षण में शिक्षा पाने का सौभाग्य मिला, फिर विशेष सन्मान के योग्य श्रीमान बलदेव सिंह जी से शादी होने के कारण, उन्हें अपनी योग्यता निखारने और श्रीमान जी के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर काम करने की क्षमता हासिल हुई।

इसके बाद वक्ता ने अपना ब्यान आरम्भ किया।

उन्होंने बताया कि विकास का अर्थ है जीवित और अजीवित पदार्थों का पहले से श्रेष्ट, हितकर और बेहतर बनना - चारों जगतों का विकास हुआ है और मनुष्य जगत में एक - एक जन नई क्षमताएं लेकर जन्मा है जैसे स्टीफनसन ने भाप का अविष्कार किया तो नये युग का निर्माण किया। इसी प्रकार सात्विक पुरूषों ने एक - एक बुराई को देखा और उसे दूर किया। उनकी विशेष योग्यताओं से समाज में विकास हुआ। परन्तु धर्म की दुनियां बहुत हद तक इस विकास से वंचित रही।

फिर वक्ता ने बहुत सारी भविष्य की सम्भावनाएं जो विचार शील महा पुरूषों ने बताई, उनका ब्यान किया, जिसमें विशेष रूप से रविन्द्र नाथ टैगोर की वह बानी जिसमें उन्होंने भारत देश में एक ऐसे उद्धारकर्त्ता पैदा होने के विषय में की थी। वास्तव में नेचर के विकास क्रम में उस समय भारत भूमि पर ही अध्यात्मिक सूर्य परम पूजनीय भगवान देवात्मा का उदय हो चुका था, जिनके भीतर सर्वोच्च देव शक्तियां बीज रूप में आई और उनसे निराली देव ज्योति और देव तेज का विकास हुआ।

उसके बाद श्री हक्सले साहिब के द्वारा और सम्भावनाओं के ईलावा जो उन्होंने कहा था कि हमें ऐसा धर्म चाहिए, जो यह विज्ञान मूलक उत्तर दे सके कि विश्व क्या है? मनुष्य क्या है? उसका लक्ष्य क्या है? विश्व के और अस्तित्वों के साथ उसके सम्बन्ध का समाधान क्या है? उसकी Destiny क्या है? पढ़कर सुनाई और उनके इन प्रश्नों का उत्तर विज्ञान पर अधारित जो देव धर्म ने दिया है, उसको विस्तार से बताया।

सर्वप्रथम विश्व के रूप के विषय में बताया कि जड़ और शक्ति वशिष्ट सब जीवित और अजीवित अस्तित्वों को ही विश्व वा नेचर कहते हैं। नेचर में नियमों का राज्य है और वह नियम अटल हैं। सब अस्तित्वों में नियमों के अनुसार ही परिवर्तन होता है। नियमों के अनुसार कोई भी अस्तित्व सर्वज्ञ, सर्वज्ञानी और उसका पैदा कर्त्ता नहीं। सब करामातें, यूनियां और पुर्नजन्म के विश्वास मिथ्या मूलक हैं।

मनुष्य क्या है? परम पूजनीय भगवान देवात्मा ने जो मनुष्य प्रकृति के ऊपर से ढकण उतारा है कि मनुष्य वह है जो सुख अनुरागी हो और दुख से घृणा करता हो। इसको विस्तार से बताया।

मनुष्य का लक्ष्य क्या है? मनुष्य का लक्ष्य किसी प्रकार का भी सुख लाभ करना नहीं, क्योंकि सब प्रकार के सुखों के अनुराग उसे दुखों में फंसाते

हैं मिथ्या और झूठ की उत्पत्ति करते हैं स्वाद अनुराग, आलस्य, धन अनुराग, स्वार्थ, अंह, मान, बड़ाई, प्रशंसा आदि किस प्रकार मनुष्य के जीवन को नर्क बनाते हैं, उनका ब्यान किया गया है। मनुष्य का लक्ष्य अपने अस्तित्व का ज्ञान वा बोध पाना है। नीच शक्तियों को जानना उनसे छुटकारा पाना और उच्च भावों का विकास करना है।

मनुष्य के सम्बन्धों का समाधान क्या है?

मनुष्य को चारों जगतों के सम्बन्ध में जो नर्क पैदा किया हुआ है, देव धर्म बताता है कि शारीरिक रोगों की तरह मनुष्य के उपरोक्त अध्यात्मिक रोग हैं, जो इसका कारण हैं। और उन रोगों को दूर करने के लिए देव धर्म ऐसा अनोखा वातावरण प्रदान करता है। जो उसकी सब समस्याओं को हल कर सके। क्योंकि यह वातावरण देव धर्म के संस्थापक परम पूजनीय भगवान देवात्मा की अद्वितीय देव शक्तियों से जो अद्वितीय देव ज्योति और देव तेज की लहरें निकलती हैं, वह मनुष्य का अध्यात्मिक विकास करती हैं। मनुष्य को उसका वास्तविक रूप दिखाती हैं। उसके नीच सुख अनुरागों और नीच घृणाओं की भयानकता और उनका विनाशकारी रूप दिखाती हैं और उनसे निजात देने की क्षमता उनके बल में है।

फिर वक्ता ने कुछ सुन्दर उदाहरण पेश किए कि इस वातावरण में बैठकर किस प्रकार एक घमंडी पति ने पत्नी से क्षमा मांगी। एक-एक उदण्ड बच्चा सेवाकारी बना। अपवित्र जीवनों को बदलकर पवित्रता की मूरत बना दिया। स्वार्थी मनुष्यों को परोपकार में समस्त जीवन अर्पण करने के योग्य बना दिया।

इस प्रकार देव धर्म का यह दावा है कि केवल वही विश्व धर्म बनने की क्षमता रखता है, विश्व के लिए परम पूजनीय भगवान की यह अनोखी देन है।

यह सारा लैक्चर परम पूजनीय भगवान के प्रभावों के कारण बहुत ही सिलसिलेवार और प्रभावदायक था। बाद में वक्ता को कितने जनों ने बधाई दी और बताया कि उन्हें बहुत लाभ पहुंचा है।

13 दिसम्बर का मुबारक दिन विशेष था। यह गुरु महाराज के शुभ जन्म का दिन था। इस दिन आज से 158 वर्ष पहले परम पूजनीय भगवान देवात्मा का शुभ जन्म सूर्य उदय होने के समय श्री अकबरपुर, ज़िला कानपुर में पौषवदी प्रतिपदा को हुआ था। इस दिन को विशेष खुशी के रूप से मनाया जाता है।

सुबह 6.30 बजे, सबसे पहले सुबह धर्मशाला के आंगन में नहा धोकर यात्री इकट्ठे होने लग पड़े और श्रद्धा भाव से भरकर भजनों का गान आरम्भ हो गया और पूजनीय भगवान की जय के नारे लगे। यह बहुत सुन्दर नज़ारा था। भजन गाते-गाते सूर्य की पहली किरण के साथ घण्टा बजा, इसके साथ "भगवान देवात्मा की जय" का नारा बुलन्द हुआ और साथ ही बैंड बाजा बजने लगा। और फिर सबने मिलकर जोश से भरकर यह भजन गाया। "प्रगटे देवगुरु भगवान जीवन ज्योति देने वाले।"

इसके बाद श्रीमान बलदेव सिंह जी मंत्री देव धर्म ने जोश से भरकर हर वर्ष की तरह श्रद्धा भाव से परम पूजनीय भगवान देवात्मा के आर्विभाव की पाक खुशी उपस्थित जनों के साथ बांटी। अपने सबके, मानवता के, स्त्री जाति के, पशु जगत के सौभाग्य का वर्णन किया। जो महान उपकारों, विशेषकर आत्म ज्ञान और आत्म कल्याण की गुरु ने

गंगा बहाई है, जो बहुपक्षिय मानव भले का द्वार खोला है, उसको चित्रित किया। यह सारा ब्यान दिलों को हिलाने वाला था और गुरु के चरणों में झुका रहा था।

आखिर में उन्होंने हाजरीन को प्रेरणा की कि आज के दिन शुभ संकल्प करने, गुरु मिश्न में भेंट देने का दिन है। इस सौभाग्य को सफल करना है। चार बार जय ध्वनि करके यह भाव पूर्ण ब्यान समाप्त किया गया।

फिर बैंड बाजा बजता रहा और कुछ बुर्जुग वा बच्चे खुशी के साथ बैंड के साथ नाचते रहे। बड़ा मनोहर दृष्य था।

इसके उपरान्त उपस्थित जनों ने अपने-अपने हार लेकर कतार में जाकर पूजनीय भगवान की छवि के आगे रखे और प्रणाम किया। उसके बाद आज के दिन की सभा हुई।

महासभा – समय 8.30 बजे

सभापति – श्रीमान बलदेव सिंह जी

विषय – परम पूजनीय भगवान देवात्मा का परम लक्ष्य और उसकी सिद्धि के लिए उनका घोर तप और उत्पीड़न, धन और जन की अपील। सभापति जी ने बताया कि नेचर में नियमों का राज है। नेचर स्वम्भू हैं, इन नियमों को जानना मनुष्य का बहुत बड़ा सौभाग्य है। नेचर का एक नियम विकास का नियम है। उसको समझे बिना देवात्मा की समझ नहीं आ सकती। चारों जगतों में आए विकास का संक्षेप वर्णन किया। मनुष्य के मानसिक विकास के लिए संस्थाओं का विकास हुआ है। मनुष्य ने धन और सत्ता प्राप्त करने के साधनों का विकास किया है। मनुष्य के नीच भावों ने सब सम्बन्धों में दुख और नर्क पैदा किया है। मानव समाज में बुराई, पाप, अत्याचार, उत्पीड़न और आतंक जारी है। सुख लालसाएं मनुष्य को अन्धा बनाती हैं। परम पूजनीय भगवान देवात्मा सचाई और भलाई के अनुरागी हैं। वह मिथ्या और बुराई के पूर्ण शत्रु हैं। जो जन पूजनीय भगवान के साथ जुड़ता जाएगा। उसके भीतर से पाप और झूठ खत्म होता जाएगा।

परम पूजनीय भगवान ने 16 वर्ष की उमर तक आठवीं कक्षा पास की, विद्या के अनुराग के कारण रूड़की इंजनियरिंग कॉलेज में पहुंच गए। वह ऋषि जी महाराज से मिले उनसे वेदान्त की शिक्षा प्राप्त की। वहां पढ़ाई खत्म करके 22 - 23 वर्ष की उमर में लाहौर पहुंच गए। बह्मों समाज में शामिल हो गए, वहां प्रधान प्रचारक बन गए। जब वहां के एक उच्च कोटि के नेता ने अपनी छोटी उमर की लड़की की शादी यह कहकर कर दी कि उन्हें परमात्मा का हुक्म है, उन्हें बहुत गहरा आघात पहुंचा और उन्होंने अलग ब्रहमों समाज बना ली। आखिर सन् 1882 में देव समाज की स्थापना की। धीरे-धीरे उन पर वैज्ञानिक विधि का अधिकार होता गया और उन्होंने अपने सब विश्वासों को विज्ञान के आधार पर परखना आरम्भ किया। इस प्रयोग में जब ईश्वर के मिथ्या होने का यकीन हो गया तो न केवल ईश्वर का विश्वास त्याग दिया बल्कि ईश्वर विश्वास सम्बन्धी सब पुस्तकों को जला दिया। परोपकारी जन नौकरी भी नहीं कर सकता। मिस मेरी कारपैंटर की सेवा भावना ने उन्हें और उत्साहित कर दिया। महात्मा बुद्ध की जीवनी से भी बहुत प्रेरणा मिली। मुक्ति फौज के मेजर टक्कर और उनकी धर्म पत्नी के जीवनों ने भी उन्हें और उत्साह दिया। पूजनीय भगवान ने भी नौकरी से त्याग पत्र दे दिया। त्याग पत्र देकर इस प्रकार अनुभव किया कि मेरी बेड़ियां कट गई हैं।

हमारे लक्ष्य सुख प्राप्ति हैं, यश प्राप्ति हैं। परन्तु पूजनीय भगवान ने "सत्य शिव सुन्दर ही मेरा परम लक्ष्य होवे, जग के उपकार ही में जीवन यह जावे" नामक अद्वितीय लक्ष्य ग्रहण किया। इसी लक्ष्य से पूजनीय देव शास्त्र पैदा हुआ।

जग के उपकार खातिर जीवन व्रत धारण किया, परन्तु उसी समय से विरोधता शुरू हो गई। मानों चारों तरफ आग लग गई। मनुष्य की अंह प्रियता विरोधता का मुख्य कारण था। संस्कार, मत, विश्वास, रूचि, ईच्छा, स्वभाव, आचार का प्यार, बुरी से बुरी, पापी से पापी गति का पक्षपाती बनकर देवात्मा को सताया, तड़पाया। वर्षों तरह - तरह के इल्ज़ाम लगाकर तड़पाते रहे। उन्हें पापी, अपराधी, खबती, पागल, व्यभिचारी और कंजर कहा गया। इशतिहारों, किताबों द्वारा बदनाम किया गया। ऐसे - ऐसे दोष उन पर लगाए गए जिनसे वह अपने शिष्यों को बचाते थे। आखिर ऐडीटरों के खिलाफ मान हानि का दावा किया, उन्हें क्षमा मांगनी पड़ी और कई अखबारों में अपने लगाए दोषों का खण्डन करना पड़ा। विलाप के लेख से गुरु महाराज के दुखों और कष्टों की तस्वीर पेश की गई। मुकदमें पूजनीय भगवान पर दायर किए गए। चन्दा सिंह वकील ने ऐलान किया कि देवात्मा के मिशन को ग़ारत करना और देवाश्रम के स्थान को नीलाम करवाना मेरी जिन्दगी का लक्ष्य है। सब मुकदमों में पूजनीय भगवान कामयाब हुए। विरोधी वकील उनके शिष्य बनने के लिए मजबूर हो गए। स. गुरुमुख सिंह जी बाद में कर्मचारी बनें। 4 वर्ष तक देव रत्न, धर्म पाल, झांगी राम, मन्सा सिंह आदि ने बहुत सताया, परन्तु सब को मुंह की खानी पड़ी। यह सभा बहुत ही प्रभावशाली थी और पूजनीय भगवान के महा त्यागी रूप को बहुत कुछ अधिकारी जनों के आगे स्पष्ट कर रही थी।

उसके धन और जन की अपील की। निम्नलिखित जनों ने सत्संगों में शामिल होने के वायदे किए।

श्रीमान सीता राम जी - सारी संगतों में आने का वायदा किया।
श्रीमान जागीर सिंह जी - सारी संगतों के लिए वायदा
मधु सूदन जी - कल्याण सत्संग
जलधर जी - कल्याण सत्संग
श्रीमान मुंशी सिंह जी - सारी संगतों का वायदा
श्रीमान तेज राम जी - कल्याण सत्संग
अनिल जी - कल्याण सत्संग
ओम प्रकाश जी वर्मा - सारे सत्संग
श्री नरिन्द्र जी चौधरी - कल्याण, मल्लेका, पदमपुर।

आगे दान देने वालों की लिस्ट दी जा रही है।

महोत्सव के शुभ अवसर पर जिन दानियों ने 500 वा उससे अधिक दान दिया उनके नाम निम्नलिखित हैं :-

1.	डा. देव अनुरूप बराड़ अमरीका सपुत्र श्रीमान बलदेव सिंह जी (2000 डालर प्राय: 1 लाख)	1,00000/-
2.	डा. विनोद जी खेड़ा	30,000/-
3.	श्री बलवन्त राए जी अरोड़ा कैनेडा (ट्रांटो)	20,000/-
4.	गिलको परिवार (सपुत्र डा. इकबाल सिंह जी)	15,000/-
5.	श्रीमती स्नेह जी राएपुर रानी	15,000/-

6.	मिसिज़ बलवन्त राए जी अरोड़ा, कैनेडा	10,000 / -
7.	प्रिंसीपल एस, एन बाली	3000 / -
8.	सरदार गुरु सेवक सिंह जी बराड़ (सपुत्र श्रीमान हरनाम सिंह जी मल्लके)	1000 / -
9.	श्रीमान जगीर सिंह जी	1000 / -
10.	श्रीमान जगजीत सिंह जी	1000 / -
11.	डाक्टर सतिन्द्र ढिल्लों	1000 / -
12.	श्रीमान तेजराम जी गुजरात	500 / -
13.	प्रेम बाला जी खोसा	500 / -
14.	सरोज जी कक्कड़	500 / -
15.	श्री मधु सूदन जी	500 / -
16.	श्री जसविन्द्र जी भुल्लर	500 / -
17.	श्री ओम प्रकाश जी वर्मा	500 / -
18.	श्री गुरुदेव राज जी	500 / -
19.	तेज सिंह जी थराजवाला	500 / -
20.	इकबाल सिंह जी	500 / -
21.	शशी जी खेड़ा	500 / -
22.	श्री स्वरूप जी वशिष्ट	500 / -
23.	श्रीमान ज्ञान चन्द जी गोनियाना	500 / -
24.	श्री कृष्ण लाल वडूला जी (दिल्ली)	500 / -
25.	श्री सुन्दर लाल जी केसूपुरा	500 / -

उसे बाद चार जय ध्वनि करके यह सभा समाप्त की गई।

13.12.2008 दोपहर 1.00 बजे

बच्चों की सभा : – इस सभा का संचालन श्रीमती सुरजीत जी बराड़ ने किया। श्रीमती सरोज जी कुक्कड़ और उनकी पुत्रवधु रशमी ने इसमें सहायता की।

छोटे - छोटे बच्चों ने परम पूजनीय भगवान देवात्मा की महिमा विषयक भजनों का गान किया, कुछ जीवन कथाएं सुनाई। उन्हें ईनाम बांटे गए।

उसके बाद चण्डीगढ़ कोचिंग सैंटर के बच्चों ने बहुत ही सुन्दर भजनों का गान किया, इस सब प्रोग्राम में क्या खेड़ा साहिब ने, क्या उनके स्टाफ ने और संगीतकारों ने बहुत मेहनत की बहुत ही सुन्दर वातावरण बना।

4.00 बजे शाम का लैक्चर

वक्ता – डा. विनोद जी खेड़ा

विषय – नर्क और स्वर्ग

सभापति – श्रीमान बलबहादुर सिंह जी।

पहले श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने बहुत सुन्दर शब्दों में उनका परिचय करवाया कि किस प्रकार वह परम पूजनीय भगवान देवात्मा की शिक्षा के महत्त्व को समझते हैं और अपनी प्रतिज्ञाओं को पालन करने में कितने दृड़ संकल्प रहे हैं। उसके

बाद वक्ता ने अपना ब्यान बड़े सरल ढंग से शुरू किया।

सायं : 4.00 बजे पब्लिक लैक्चर
वक्ता : श्रीमान डा. विनोद खेड़ा जी।
सभापति : श्रीमान बलबहादुर सिंह जी।
विषय : इसी धरती पर नरक एवं इसी धरती पर स्वर्ग।

श्रीमान बलबहादुर सिंह जी द्वारा वक्ता का परिचय कराए जाने के बाद डॉ. खेड़ा ने श्रोतागणों से यह प्रश्न पूछा कि उनके विचार से नरक किसे कहते हैं और वे स्वर्ग से क्या समझते हैं। इन प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करने के बाद उन्होंने फिर पूछा कि आप में से कौन मरणोपरांत ऐसे नरक में जाना पसन्द करेंगे। सभी ने इस प्रश्न का जवाब नहीं में दिया।

डॉ. खेड़ा ने आदम की कल्पित कहानी के माध्यम से यह स्पष्ट किया कि किस प्रकार मनुष्य सुखों की चाट में पड़ कर अपने और दूसरों के लिए दुख, मुसीबत और परेशानियां खड़ी करता है। सुखों की चाट में वह अनुचित कष्ट और निश्चित मौत को भी गले लगाने से नहीं रुकता। उन्होंने इस पृथ्वी पर मनुष्य द्वारा नरक पैदा किए जाने के अनेक उदाहरण दिए। उन्होंने बताया कि किस प्रकार उनके नाना जी को देहली में पोस्टमास्टर के पद पर नियुक्त थे, अपने तथा अपने पारिवारिक जनों के जीवन में नरक पैदा कर रहे थे। अपने उपकारी माता एवं पिता के साथ कितना घटिया किस्म का दुर्व्यवहार करते थे तथा उनके माता पिता उनके ऐसे दुर्व्यवहारों से कितने अधिक परेशान थे। पोस्टमास्टर साहब ने पिता जी ने भी अपने जीवन में कितना नरक पैदा किया हुआ था उसकी भी एक तस्वीर पेश की गई। गंगानगर के एक नौजवान के जीवन में आ रहे भयानक नरक का चित्रण भी किया गया कि कैसे वह बचपन से ही लगभग सभी बुराईयों में बुरी तरह से फंस चुका था और अपने और अपने परिवार, अपने स्कूल और अपने साथियों के लिए घातक सिद्ध हो रहा था। इसके अतिरिक्त डॉ. खेड़ा ने श्रीमान डा. हरनाम सिंह जी के भगवान देवात्मा के चरणों में आने से पहले के हालात का भी वर्णन किया। इस प्रकार जवानी में ही उनके जीवन से इतनी सड़ांद आनी शुरू हो गई थी जिसके कारण उन्होंने अपने इर्द-गिर्द भयानक नरक बना लिया था और उनकी यह अवस्था कुछ देर और चलती तो उनका नामोनिशां तक खत्म हो जाना निश्चित था।

अगस्त में नैना देवी मन्दिर में उस देवी के लगभग 150 भक्त मारे गए तथा 300 से ऊपर जख्मी हुए जिन्हें न तो कोई ईश्वर बचा सका न नैना देवी। उनके परिवारों में आए नरक की कल्पना करना भी बहुत कठिन है। डॉ. खेड़ा ने मुम्बई में आतंकवादियों द्वारा जो नरक पैदा हुआ उसका भी जिकर किया और यह बताया कि एक तरफ तो कुछ राज्यों के मुख्यमंत्री और उपमुख्यमंत्री द्वारा कैसे शर्मनाक ब्यान दिए गए और दूसरी तरफ लता मंगेश्कर के भावों को उपस्थित जनों के समक्ष पेश किया कि किस प्रकार वह उन तीन दिनों (जबकि आतंकवादी मुम्बई में निर्दोष लोगों की हत्या कर रहे थे) में लगभग 300 बार ऐसी दुखदाई घटना को लेकर रोई हैं।

डॉ. खेड़ा ले उपस्थित जनों से आतंकवादियों की Definition पूछी एक श्रोतागण ने बताया कि जो निर्दोषों की हत्या करे। इस पर डा. खेड़ा ने श्रोतागणों से पूछा कि क्या वे लोग जो निर्दोष पशुओं को मारते हैं या खा जाते हैं इस Definition

के अन्तर्गत नहीं आते है? लगभग सभी ने इस बात पर हामी भरी कि निर्दोष पशुओं को मारना भी आतंकवादी क्रिया है। डा. खेड़ा ने यह भी बताया कि पशुओं के शरीरों में भी हमारे शरीरों की भांति गंदगी होती है जिसे उबालने से भी वह गंदगी गंदगी ही रहती है, खाने योग्य वस्तु नहीं बनती। पशुओं को खाना World Economics के लिए भी हानिकारक है। एक किलो पशु प्रोटीन प्राप्त करने के लिए पशु को 7 से 8 किलो तक पौधों से प्राप्त प्रोटीन खिलाना पड़ता है। USA के एग्रीकल्चर डिपार्टमेंट के डाटा के अनुसार एक पशु को चराने के लिए जितनी भूमि चाहिए, उसमें मनुष्यों के 5 परिवारों का काम चल सकता है। डा. खेड़ा ने उपस्थित जनों से पूछा कि क्या यह सब धरती पर नरक का नमूना नहीं है।

शराबें पीने से व अन्य नशेदार पदार्थों के प्रयोग से क्या नरक आ रहा है, वह किसी से छिपी नहीं। चोरी, डाके, बेईमानी, रिश्वतखोरी, धोखेबाज़ी इत्यादि तो विशेषकर हमारे देश की जड़ों को घुन की न्याई खाते जा रहे हैं। काम सुख की गुलामी से जो इस पृथ्वी पर नराक पैदा हो रहा है उसकी भी एक छोटी सी झलक पेश की गई।

इस लैक्चर के अगले भाग में श्रीमान डा. खेड़ा ने धर्मों के इतिहास से यह जानकारी दी कि किस प्रकार धर्म वैज्ञानिकों के द्वारा खोजी गई सच्चाईयों का समर्थन करने की बजाए वैज्ञानिकों को ही जिन्दा जला देने और तरह-तरह की यातनाएं देने वाले बन गए। ब्रूनो तथा गैलिलियो जैसे महान वैज्ञानिकों को किस प्रकार सताया और तड़पाया गया उसकी कहानी भी महा दुखदाई नरक से कम नहीं। हमारे हिन्दु धर्म में भी सती प्रथा के द्वारा किस प्रकार निर्दोष स्त्रियों को जिन्दा आग में जलाया गया, विधवा विवाह के खिलाफ होने के कारण धर्मों ने स्त्रियों पर कितना अत्याचार किया। बाल विवाह भी कितनी गलत धार्मिक प्रथा थी। वर्तमान युग के सबसे बड़े वैज्ञानिक आइंस्टाइन ने धर्मों के द्वारा इस प्रकार के अनर्थ की बड़ी ज़ोरदार निंदा की है। उन्होंने ईश्वर की विश्वास को एक घटिया दिमाग की उपज बताया है।

इसके पश्चात बच्चों ने एक बड़ा धार्मिक गीत प्रस्तुत किया जिसके शब्द थे "मेरे सत्गुरू इस धरती को सच्चा स्वर्ग बनाने आए।" इसके पश्चात सूर्य के मुख से प्रकृति के विकास की अनोखी गाथा संक्षिप्त रूप से प्रस्तुत की गई और यह बताया गया कि इस विकासक्रम में किस प्रकार आज से 158 वर्ष पूर्व परम पूजनीय भगवान देवात्मा का आविर्भाव हुआ और वे कैसी अनोखी और अद्भुत देव शक्तियां बीज रूप में लेकर इस पृथ्वी पर आविर्भूत हुए। उनके सत्य अनुराग के 8 अंगों का वर्णन करके वक्ता ने यह समझाने की कोशिश की कि वे किस प्रकार हम सब मनुष्यों से बिल्कुल निराली और अद्वितीय योग्यताएं लेकर पैदा हुए थे और अपनी इन योग्यताओं के फलस्वरूप किस प्रकार उन्होंने पहले बताए बए पोस्टमास्टर साहब और उनके पिता जी तथा शेष परिवार की जिंदगी में आश्चर्यजनक उच्च परिवर्तन उत्पन्न किया और उनका नारकी जीवन स्वर्गीय जीवन में बदल दिया। गंगानगर के नवयुवक भी किस प्रकार उच्च परिवर्तन प्राप्त करके स्वर्गीय जीवन बिता रहे हैं उसका भी संक्षेप में वर्णन किया गया। डॉ. हरनाम सिंह जी के जीवन में आए परिवर्तन से जो स्वर्गीय दृश्य उत्पन्न हुए उनका भी संक्षेप मे वर्णन किया गया।

इसके पश्चात श्रीमान डा. खेड़ा ने अपने जीवन में स्वार्थ, घमंड, आलस्य, धन अनुराग इत्यादि

के विषय में एक सीमा तक जागृति लाभ करने तथा उनसे बचने का अवसर पाने के लिए परम पूजनीय भगवान देवात्मा को धन्यवाद दिया। उन्होंने बताया कि परम पूजनीय भगवान देवात्मा की जीवन कथाओं को सुनकर और पढ़कर बहुत पहलुओं में उनका भला हुआ है और एक सीमा तक नरक से निकलने और स्वर्ग में वास करने का उन्हें अवसर प्राप्त हुआ है।

Harvard University के प्रेज़ीडेंट ने किस प्रकार अपनी University को बहुत बड़ा बनाने के अवसर को हाथों से जाने दिया, इस बात का उदाहरण देते हुए श्रीमान डा. खेड़ा ने उपस्थित जनों से ार्थना की कि जीवन में विकास के अवसर बार-बार नहीं आते और इसलिए ऐसे अवसर से लाभ उठाने में ही हम सब का भला है।

एक पेंसिल की कहानी के द्वारा डॉ. खेड़ा ने श्रोतागणों को ऐसा अनुभव कराने का प्रयत्न किया कि जिस प्रकार एक पेंसिल किसी घटिया आदमी के हाथों में आकर घटिया बातें लिखती है और अच्छे आदमी के हाथ में आकर अच्छी बातें, उसी प्रकार मनुष्य की भी कहानी है। यदि वह भगवान देवात्मा के हाथों में आ जाए तो वह सभी उच्च स्वर्गीय सुख प्राप्त कर सकता है। जिस प्रकार पेंसिल का सबसे महत्त्वपूर्ण भाग उसके भीतर है, बाहर की लकड़ी की भीतरी भाग के बिना कोई कीमत नहीं उसी प्रकार मनुष्य का भीतरी भाग अर्थात् उसका आत्मा ही उसका सबसे महत्वपूर्ण भाग है। इस आत्मा के बिना मनुष्य का कोई मूल्य नहीं इसलिए उसे बाह्यक शरीर से कहीं अधिक अपने आत्मा की फिर करनी चाहिए और जैसे पेंसिल जहां भी लिखती है अपना निशान छोड़ जाती है उसी प्रकार को भी अपने पीछे एक ऐसा जीवन छोड़ जाना चाहिए जो सचमुच स्वर्गीय हो और दूसरों के लिए सेवाकारी।

अंत में डा. खेड़ा ने जापान में किए गए 30 साल लम्बे अर्से तक बंदरों पर किए गए अनुसंधान का वर्णन किया। इस अनुसंधान के द्वारा उन्होंने यह बात स्पष्ट की कि बेशक अभी भगवान देवात्मा के मिशन को समझने और उससे लाभ उठाने वाले लोगों की संख्या बहुत ही कम है पर एक समय ऐसा आएगा जब पूरी मानवता को उनके मिशन की महिमा का आभास होगा और पूरी मानवता उससे लाभ उठा पाएगी।

सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने वक्ता के लैक्चर की विशेषताओं का वर्णन करते हुए उन्हें धन्यवाद दिया और परम पूजनीय भगवान देवात्मा की उन पर विशेष कृपा का उल्लेख किया और ऐसी आशा व्यक्त की कि उन पर और भी भगवान देवात्मा की कृपा हो।

महोत्सव का आखिरी दिन

पहली सभा, सुबह 8.00 बजे

विषय – नये सेवक सेविकाओं का ग्रहण

सभापति – श्रीमान बलबहादुर सिंह जी

पहले भजन के बाद परम पूजनीय भगवान देवात्मा की सुन्दर छवि का फूलों के हार से अर्चन किया गया। फिर देव स्तोत्र का गान वा व्याख्या की। फिर सभापति जी ने प्रार्थना की, "करें हम बेनती सारे, जीवन का द्वार खुल जावे, सेवक बनने का इन सबको महा अधिकार मिल जावे।" नामक भजन का गान किया गया।

निम्नलिखित 6 जनों को सेवकी की प्रतिज्ञाएं करवाने से पहले उनका परिचय सैक्रटरी साहिब जी ने फरमाया। फिर प्रतिज्ञाएं करवाई गई।

1. श्रीमान हरबंस लाल जी, रिटायरड प्रिंसीपल

साहिब गोनियाना मण्डी

2. श्रीमान गौरव राणा जी (पुत्र श्रीमान नरेन्द्र जी मेरठ)

3. श्रीमती पुष्पा देवी जी (पत्नी हैडमास्टर साहिब जी, गोनियाना)

4. श्रीमती राखी रानी जी (पुत्री श्रीमान नरेन्द्र जी, मेरठ)

5. श्रीमती बीरांबाई जी (पत्नी श्रीमान सुन्दर लाल जी, मल्लेका)

6. श्रीमती परमिन्द्र कौर जी (पत्नी श्रीमान जोगिन्द्र सिंह जी, मल्लेका)

हाजरीन ने सेवकी में नये जनों के खुशी में उन्हें फूलों के हार पहनाएं और कईयों ने दान भी दिया।

दूसरी सभा

सभापति – श्रीमान बलदेव सिंह जी

विषय – भाव प्रकाश

श्रीमान जगजीत सिंह जी :– यहां आकर बहुत खुशी मिली है श्रीमान जी हमारा जो भला चाहते हैं और फोन करके उत्साहित करते रहते हैं, उसका एहसास हो रहा है। सब सेवाकारियों का धन्यवाद करता हूँ। नया ज्ञान और प्रेरणाएं मिली हैं। खेड़ा साहिब का विशेष रूप से धन्यवाद करता हूँ। कविता लिखी हुई थी, वह पढ़कर सुनाई। चारों जगत उपकारी नज़र आए हैं। नई शक्ति और नया जीवन मिला है। तेरी भक्ति मिले, उपकारियों का भला हो यही कामना करता हूँ।

श्रीमान रजिन्द्र जी देहरादून :– मैंने इस दुनियां में एक नर्क देखा है। इस दर पर आकर इस नर्क से बचा हूँ। मैं धीमान साहिब का ऋण नहीं चुका सकता मेरा काम अब अच्छी तरह चल रहा है। सब का भला हो, सबके भले में ही मेरा भला है। सब कुछ यहां मिलता है। इस दर से जुड़कर मैंने स्वर्ग का स्वाद भी देख लिया है।

श्रीमान तेज राम जी :– मुझे सत्संग से परिशोध की प्रेरणा मिली है। श्रीमान जगदीष जी का संग्राम बहुत अच्छा लगा। मैं भी पहले आकर सेवा किया करूंगा। मुझे महोत्सव कभी नहीं छोड़ना चाहिए। आखिरी सभा तक शामिल होना चाहिए। मैं पाठ विचार के साधन और गहरे करूंगा। प्रतिज्ञाएं Review हो जाती हैं।

श्री मनू जी पदमपुर :– डेढ़ दो साल मेरा बहुत भला हुआ। मेरी गल्तियों के कारण आपको दुख पहुँचा। मैंने अपनी बहुत हानि कर ली है। घर की सुख शान्ति फिर बिगड़ गई है। मैं फिर नर्क में पड़ गया हूँ। मैं प्रतिज्ञा करता हूँ। कि जीवन को फिर से सुधारने का यत्न करूंगा। श्रीमान जगदीष जी के प्रति सन्मान पैदा हुआ है। कल्याण सत्संग पर पहुँचूंगा। ज्यादा सत्संग में रहने की कोशिश करूंगा। अपना नाश नहीं करूंगा।

श्रीमान जलधर जी :– इस बार और लाभ हुआ है। अपने माता पिता वा अन्य उपकारियों की ओर ध्यान गया है। अपने अध्यापिक के उपकार सामने आए हैं। पिछली बार पिता जी को सेवा के कामों के लिए 2500 रू दिए थे, इस दफा 3000 रू दूंगा। मैं शराब मांसाहार वाली पार्टियों में नहीं जाऊंगा। आगे से अधिक छुट्टी लेकर सत्संग में शामिल हूंगा।

श्रीमान जागीर सिंह जी :– अपने उपकारियों को याद करता हूँ। मैं शराबी, कबाबी और पापी सभा में बैठने के योग्य नहीं था। श्रीमान जी को घृणा करता था, उन्हें छुरा मारने के लायक समझता था। श्रीमान जी की लम्बी उमर के लिए हररोज़ कामना करना हूँ। परिवार में स्वर्ग पैदा हुआ

है। मेरे उपकारी नज़र आने लगे हैं। और प्यारे लगने लगे हैं। अपनी माता जी को सन्मान सहित प्रणाम करता हूँ, यह गुरु की कृपा है। मेरी बुरी नज़रें बदल गई। पाप करने के सिवा मेरा कोई काम नहीं था। छोटे बच्चों और पत्नी पर अत्याचार करता था। मैं अपनी धर्म पत्नी और माता जी से क्षमा मांगता हूँ। यदि इस दर से दूर हो गया, तो घर में तबाही आ जावेगी। मेरा मांसाहार छूट गया, शिकार छूट गया। एक तीतर के छोटे से बच्चे को मारकर कच्चा ही खा गया। मैं राक्षस था, बचा लिया गया हूँ। गुरुद्वारे मन्दिरों में जाता रहा, कुछ समझ नहीं आई यहां आकर काया पलट गई। कुछ न कुछ भलाई आई है। यहां आकर आत्मिक रोगों का ईलाज हो रहा है। मैं अनपढ़ गंवार हूँ, मुझे बोलना भी नहीं आता। मैं श्रीमान जी पास सत्संग के लिए हर जगह पहुँचूगा। मैं इस दर का काम करूंगा और ढंग से करूंगा। मैं कहीं दूर न हो जाऊं।

श्री ओम प्रकाश जी आदर्श :- मैं बाहर बैठने की गलती को स्वीकार करता हूँ। मैं इस फिज़ा से बहुत प्रभावित हूँ। गीत का गान किया। भगवान देवात्मा के असरों का मुझ पर बहुत असर है। डॉ. खेड़ा जी के अन्दाज़ से बहुत प्रभावित हुआ हूँ। सेहत और आत्मा की जो रक्षा हुई हैं यह सब गुरु की कृपा है।

श्रीमान जगजीत सिंह जी :- श्रीमान मुलख राज जी मेरे विशेष उपकारी हैं। मैं उनका और उनके परिवार का भला चाहना और करना सदा जारी रखूंगा। उनके परिवार की सेवा करके अपना कर्ज़ा उतारना चाहूँगा।

श्रीमान हुशियार सिंह जी :- मुझे देव समाज से दूर होकर बहुत हानि हुई है। मैं नशे का शिकार हो गया था। मुझे नशा छुड़वाने वाले Centre में भर्ती करवाया गया। मुझे परिवारिक जनों पर गुस्सा आया, जो अब तक भी नहीं गया, उसे भुलाने की कोशिश करूंगा। उस गति से मेरा भला होगा। मैं नशे से बचा रहूंगा।

श्रीमान सीता राम जी :- मैं अपनी पत्नी का कोई ध्यान नहीं रखता, अब अपने काम खुद करूंगा और उनके कामों में सहायता करूंगा। उनकी बिमारी में सेवा करूंगा। अच्छा व्यवहार रखूंगा, नहीं तो अगले साल दण्ड दूंगा।

श्रीमान मधुसूदन जी :- मुझे खुशी है कि मेरे भाई को लाभ हुआ है, उनका भला हुआ है। मैं अपने उपकारी चाचा जी के लिए कुछ नहीं कर सका, इसका दुख है। जिस प्रकार चाची जी को प्रणाम किया, अपनी माता को नहीं किया यहां सभाओं में अपनी ओर ध्यान गया है। अपनी कमीयां नज़र आई हैं। उनसे बचना है।

श्री हरिन्दर सिंह जी (महिमा सवाई) एक फरवरी तक शराब छोड़ने की प्रतिज्ञा करता हूँ। शराब की बुराई समझ में आई है। कल्याण जरूर पहुंचूंगा। बेटा अण्डा खाता है, उसको भी रोकूंगा।

श्रीमान बूटा सिंह जी :- अपनी कमीयां नज़र आई हैं। मैं टावर पर चढ़ता हूँ और फिर गिर जाता हूँ। वायदा करता हूँ कि मैं अपना कर्जा उतारकर सभा में शामिल हूंगा। यदि श्रीमान जी का नाम लेकर कोई बात करता है, तो मुझे तकलीफ होती है। मैं बड़ों को सन्मान पूर्वक बुलाऊंगा। मुझे श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने कुछ कह दिया, मैं उनसे दूर हो गया। वह बात सच्ची थी, परन्तु मुझे छुरी की तरह महसूस हूई। मैं उनसे क्षमा मांगता हूँ। मेरे पास माता पिता की फोटो नहीं, अब इसको बनाऊंगा और सामने रखकर प्रणाम किया करूंगा।

श्रीमान हरदेव सिंह जी :- मैं कई

सालों से सेवक हूँ। मैं सोचता हूँ कि मैं ठीक हूँ। मैं अपने बचने को भी सब पर एहसान समझता था, यह नहीं समझता था कि उनका मेरे ऊपर उपकार है। आज समझ आ रहा है कि मेरे धर्म सम्बन्धियों का मेरे ऊपर कर्ज़ा है। कई धर्म सम्बन्धियों ने मेरी सेवा की है।

श्रीमान सरताज सिंह जी :-

सभाओं में बैठकर माता का स्वरूप नज़र आया। माता जी, मैं आपका बहुत सम्मान करता हूँ। मुझे यह पल-पल दिल व दिमाग को अहसास है कि पूरी दुनियां में आपसा प्यारा, हमदर्द पालनकर्ता व स्नेहकर्त्ता कोई नहीं है। एक आप ही ऐसी हस्ती हैं जो मुझसे कुछ नहीं मांगती सिर्फ देती हैं, अच्छा दिमाग, खून, अच्छे खानदानी जीन्स व यह अस्तित्व आप ही की देन है। मुझे याद है जब में 6 साल का था तो आपने मुझे पहला साइकिल खरीद कर दिया था। दुख झेले, मुकद्मों में रात दिन जागे, सोना गहना व सब कुछ न्यौछावर कर दिया। बिना अलग हुए एक ही परिवार में व्यतीत किया, बर्तन धोने, कपड़े साफ करने, दूध पिलाना, ठंड से बचाना व बदले में मैंने आपको उतना सम्मान नहीं दिया। मुझे याद है जब हम 10 + 2 में पढ़ा करते थे जसकरण सिंह हमारे घर पढ़ने आया करते थे आप सुबह चार बजे उठकर सारा दिन थकहारकर आराम छोड़कर आप हमारे लिए चाय बनाती, कई बार हमें आप उठाती व मेरे दोस्तों को भी मेरे जितना स्नेह देती। पहले मुझे पता ही नहीं थी कि माँ क्या है, उनके क्या उपकार है। देव समाज के सेवक बनने पर मैंने गोबर के टोकरे उठाने शुरू किए। जो सर्दी में सिर पर सर्दी वाली सुबह में उठाती थी। नज़र आया मुझे गुरु महाराज की रोशनी मिली मैंने अपने आप से कहा, नालायक तेरी पालनकर्ता तेरी माँ, दूध पिलाने वाली, गोबर उठा सकती है तू क्या एम. ए. की अकड़ में गोबर नहीं उठा सकता। मैंने ज़ोर देकर धक्के से गोबर उठाना शुरू कर दिया। कई बार हाथ सर्दी से ठिठुर जाते तो पता लगता नालायक तूने तो अभी एक साल भर ही सर्दी का ही एहसास किया है वो बेचारी कितनी सर्दियों तक इस ठंड में गोबर उठाती रही है। क्या तुझे एक साल उठाकर ही ठण्ड लग रही है। वह मुझे कहती तू रहने दे लोग क्या कहेंगे। पर मैंने एक ना मानी कोट-पैंट पहनने वाले एम. ए. लड़के ने गोबर सिर पर खुशी से उठाया व मकान की छत पर गिराना शुरू कर दिया। माँ-पिता व बहन व पत्नी को एक नया-नया सूट खरीदकर दिया। दंडवत प्रणाम करना शुरू कर दिया एक दिन मैं सुबह उठकर माँ के चरणों में लेट गया मुझे उस दिन पता चला कि मेरी माँ सुबह काम में कैसे जूते पहनती है वो जूते प्लाटिक के थे ताकि पानी में खराब न हों। गुरु महाराज की रोशनी का कमाल है मेरे पिता जी को अधरंग हो गया जंगीर सिंह जी की गाड़ी में शहर राजस्थान ले गए। उनकी 44 दिन मालिश की। तीसरे दिन उनकी टांग से चलनी शुरू हो गई। परन्तु हाथों ने 44वें दिन काम करना शुरू कर दिया। यह मेरे गुरू महाराज की रोशनी का ही कमाल था कि मुझ जैसे घमंडी, आलसी को माता-पिता का सेवाकारी बना दिया। इस बार हम बच्चों का Tour ले गए। एक लड़की सन्तोष को उल्टीयां आने लगी। गाड़ी (बस) रोकी गई उसे गोली दी गई। पानी पिलाया व थोड़ा आराम करवाया गया। मैंने उस बच्ची को पीछे से आगे बड़ी सीट पर लिटाया उस पर शाल ओढ़ने को दी व उसकी टांगे ये सोचकर दबानी शुरू कर दी कि यदि तेरी खुद की बेटी रूबल यहां बीमार होती तो भी तू इसका दवाई, इसका ख्याल न रखता टांग न

दबाता। गुरु महाराज आप ने मेरे जैसे घमण्डी को भी अपने Students के पैर दबाने वाला बना दिया। मुझे Jesus Charist का उदाहरण याद आ गया। मैंने सोचा मेरे गुरू तो इतने निराले है कि जिन्दगी स्वर्ग बना देते है। वो बच्ची ठीक हो गई सारा टूर निकल गया बाद में उसने अगले दिन सुबह आकर मेरे पैरों को हाथ लगाकर कहा Sir, Good Morning मानो व मुझे कह रही हो Sir आपके हाथों में हम बेटियों की तरह सुरक्षित हैं। मैं अपनी गलती मानती हूँ पिछले 2 महीनों से मां के साथ उतना हाथ नहीं बंटाती मैं प्रतिज्ञा करती हूँ कि मैं वैसे ही मां को दंडवत प्रणाम किया करूंगी। मल्लेका में सभी सभाएं attend करूंगा। कल्याण में भी पहुंचने की कोशिश करूंगा। मेरे पूजनीय सत्गुरु जी तुम हो धन्य, तुम हो धन्य।

2. विशेष सन्मान के योग्य श्रीमान बलदेव सिंह जी, सत्य देव की जय,

मैं आप का अभारी हूँ आप हमें सत्संग वा सभाओं में आने के लिये प्रेरित करते हो आपकी प्रेरणा से सभाओं में आने को अवसर मिलता है। श्रीमान बलबहादुर सिंह जी, बहन सुरजीत जी वा खेड़ा साहिब, की सभाऐं सुनी बहुत लाभ हुआ। पूरे महोत्सव में रहने का सभाऐं सुनने का अवसर मिला। सभाओं से बहुत लाभ हुआ। कल्याण सत्संग में पहुंचने की कोशिश करंगा।

मुझे आपने माता पिता का विशेष उपकार नजर आता रहता है। उन्होंने केवल जन्म नहीं दिया पाला पोसा, पढ़ाया रक्षा की और सब से बढ़कर गुरू महाराज के दर से जोड़ा और हमेशा गुरू महाराज की शिक्षा से जुड़े रहने की प्ररेणा दी उनकी सोच थी कि सब देव समाजियों को अपने बच्चों को देव समाज से जोड़ना चाहिये। गुरु से जुड़े रहने से हर इन्सान अच्छा बनता है जैसे - जैसे गुरु महाराज के प्रभावों में बैठने का मौका मिलता है। उसका अपना हर प्रकार से भला होता है। किसी किसम की कमी नहीं रहती। मेरी भी प्रार्थना है कि हम सब सेवकों को अपने बच्चों को गुरु महाराज से जोड़ना चाहिये ताकि उनका हर प्रकार से भला हो सके। समाज से जुड़ने से मनुष्य बरकतों से मालामाल हो जाता है। घरों में पूर्ण मेल रहता है मेल रहने से एक दूसरे का सन्मान करने से घरों में स्वर्ग सा माहौल रहता है। हमारे घर में स्वर्ग सा माहौल है। सब गुरु महाराज की देव ज्योति और देव तेज का कमाल है बेटा, बहू, सब बहुत अच्छे है भाईयों, बहन में भी पूर्ण मेल है। सब उपकारियों की कृपा से हैं। धर्म संगत की कृपा से है।

धन्यवाद सहित।

विशेष सन्मान भाव से
सुभाष चन्द्र अग्रवाल
पंचकुला

इसके बाद सभापति जी ने गुरु महाराज, सहायकारी शक्तियों की जिनकी सहायता से यह महा उत्सव कामयाब हो सका धन्यवाद दिया। पण्डाल खड़ा करने वालों, उसको सजाने वालों का धन्यवाद किया। खाना बनाने वालों, गर्म पानी देने वालों का धन्यवाद किया। धर्मशाला के प्रबन्ध का बेहद धन्यवाद किया, जो कृपा करके सारा स्थान हमारे हवाले कर देते हैं।

सबने खड़े होकर देव आरती का गान किया और चार बार जय ध्वनि की गर्जना के साथ यह महा उत्सव सम्पन्न हुआ। 2 हजार से ऊपर की पुस्तकें बिकी। इस सबके लिए गुरु महाराज को कोटि - कोटि धन्यवाद।

(एक सेवक)

पाठ और विचार विषयक वार्षिक साधनों की तालिका

सम्वत् 2065 – 2066 विक्रमी (सन् 2009 ई.)

सं.	वार्षिक साधनों के विषय	साधन का विशेष दिन	हिन्दू त्योहार
1.	माता पिता और संतान के सम्बन्ध में	24 जनवरी, बुधवार	गणेश चौथ
2.	भाई बहनों के सम्बन्ध में	31 जनवरी, शनिवार	बसन्त पंचमी
3.	देव समाज के सम्बन्ध में	18, 19 फरवरी, बुधवार, वीरवार	
4.	पति पत्नी के सम्बन्ध में	11 मार्च, बुधवार	होली
5.	उद्भिद् जगत के सम्बन्ध में	27 मार्च, शुक्रवार	नव सम्वत्
6.	भृत्य स्वामी के सम्बन्ध में	10 अप्रैल, शुक्रवार	
7.	वंशीय जनों के सम्बन्ध में	8 मई, शुक्रवार	नृसिंह चतुर्दशी
8.	स्वदेश के सम्बन्ध में	3 जून, बुधवार	निर्जला एकादशी
9.	साथी सेवकों के सम्बन्ध में	6, 7 जुलाई, सोमवार, मंगलवार	व्यास पूजा
10.	स्वास्तित्व के सम्बन्ध में	4, 5 अगस्त मंगलवार, बुधवार	रक्षा बन्धन
11.	पशु के सम्बन्ध में	27 अगस्त, वीरवार	राधा अष्टमी
12.	परलोक के सम्बन्ध में	18 सितम्बर, शुक्रवार	अंतिम श्राद्ध
13.	स्वजाति के सम्बन्ध में	28 सितम्बर, सोमवार	दशहरा
14.	भौतिक जगत् के सम्बन्ध में	17 अक्टूबर, शनिवार	दीपावली

15.	मनुष्य मात्र के सम्बन्ध में	2 नवम्बर, सोमवार	गंगा स्नान
16.	परम पूजनीय भगवान देवात्मा के सम्बन्ध में	1, 2, 3, 4 दिसम्बर मंगलवार, बुधवार, वीरवार, शुक्रवार, विशेष दिन, 3 दिसम्बर वीरवार	गंगा स्नान

कल्याण सत्संग

हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी कल्याण मल्लकी (भटिण्डा) में विशेष सत्संग और माता - पिता दिवस रखा गया है। यह अवसर 12, 13, 14, 15 फरवरी को वीरवार, शुक्रवार, शनिवार और ईतवार को रखा गया है। पाठक गण नोट करने की कृपा करें और अधिक से अधिक संख्या में पहुंचकर लाभ उठाएं।

- मन्त्री देवधर्म

शोक समाचार

बहुत दुख की बात है कि सरदार गुरुसेवक सिंह जी बराड़ पुत्र उच्च लोकवासी श्रीमान हरनाम सिंह जी मल्लके, का अचानक 29 दिसम्बर की सुबह देहान्त हो गया है। वह भी देवधर्म के लिए श्रद्धा रखते थे, और अक्सर दान देते रहते थे। उनकी आयु 76 साल की थी। वह अपने पीछे अपनी धर्म पत्नी, तीन बेटे और चार पोते छोड़ गए हैं। हम उनके सारे परिवार और उनकी पत्नी के प्रति हमदर्दी और शोक प्रकट करते हैं और देह त्यागी की आत्मिक शांति के लिए कामना करते हैं। परिवार को धीरज प्राप्त हो ऐसी कामना करते हैं।

बलदेव सिंह

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए, (लाईफ़ वर्कर) मंत्री - देव - धर्म - मिशन, प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने ***Surya Laser Den, Chandigarh*** *से छपवाकर*

म. नं. 3154, सैक्टर 21 - डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।

Book Posts